

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 90	Year 10	Volume 9	September 2020 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	----------	---------	----------	------------------------------	---------	--

चीं-पी की चिन्ता छोड़ प्रभु में ध्यान लगायें

एक बूढ़ी माता जी मेरे पास आई और बोली, स्वामी जी मैं ध्यान में बैठती हूँ किन्तु ध्यान लगता नहीं। मैंने पूछा क्यों नहीं लगता? तो वह बोली —“ घर में बच्चे हैं, पोत पोतियां हैं उनकी चीं पीं समाप्त नहीं होती। मैंने हंसते हुये कहा—“ परिवार में बच्चे होना तो अच्छा है, जिस घर में बच्चे नहीं होते वहां तो सन्नाटा छाया रहता है। उनकी चीं- पीं में ही अपना भजन करो। वह विश्वसत नहीं दिखी तो मैंने उसे एक कहानी सुनाई। एक था घोड़े वाला। उसका घोड़ा चीं पीं की ध्वनि से बहुत बिदकता था। एक दिन घोड़े को पानी पिलाने के लिये एक कूए पर ले गया जहां रहट की चीं पीं की आवाज आ रही थी। घोड़े वाला इस डर से कि घोड़ा विदकेगा, यह सोच रहा था कि जब रहट बन्द होगा तब पानी पिलाउंगा। तभी कूए वाले ने पूछा—तुम घोड़े को पानी क्यों नहीं पिलाते? घोड़े वाला बोला जब चीं पीं बन्द हो जाये तभी पिलाउंगा। कूए वाला हंस कर बोला— जब रहट चलेगा तो चीं पीं होगी ही। यह रहट बन्द हो गया तो पानी भी बन्द हो जायेगा। इस लिए इस चीं पीं की चिन्ता छोड़ ध्यान लगाने बैठो। चीं पीं होती भी है तो होने दो। तुम्हारे मन में अगर प्रभु का प्रेम है तो इस चीं पीं के होते हुए भी तुम्हारा ध्यान लगेगा। बर्थ डे तो मनाये पर साथ ही जीवन की बैलेन्स शीट भी बनायें सागर में मिलने वाले नदियों का पानी कभी भी स्रोत की ओर बापिस जाते नहीं देखा गया, वैसे ही हमारी आयु के जो दिन बीत जाते हैं, कभी बापिस नहीं आते। बर्थ डे तो मनायें, जशन भी करें पर साथ ही अपने जीवन की हिसाब किताब भी करें। बीते वर्ष की बैलेन्स

**Contact:****BHARTENDU SOOD****Editor, Publisher & Printer****# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047****Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,****E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

शीट वही खता बैसे ही बनायें जैसे कोई बनिया बनाता हैं। एकान्त में बैठकर सोचो कि जिस उदेश्य के लिये यह मानव शरीर मिला था, वह उदेश्य कितना पूरा हुआ और कितना शेष है। यदि उतना पूरा नहीं हुआ जितना होना चाहिये था, तो दृढ़ संकल्प करो कि आगामी वर्ष में इस घाटे को पूरा करेंगे। उदेश्य पूर्ती का एक ही साधन है, प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा आत्म चिन्तन और प्रभु चिन्तन करो क्योंकि प्रभे चिन्तन द्वारा ही उदेश्य पूर्ती के लिये शक्ति मिलती है। यह भी सोचें कि जीवन का कोई ऐसा मूल्य तो नहीं जिसे हम जीवन की उधेड़ बुन में खो गये हों। अगर ऐसा हुआ है तो अपने आप में सुधार लाने का संकल्प करें और उस बात के बारे में सोचें जिसने आपको कमजोर का दिया।

संसारिक व्यक्ति के लिये योगाभ्यास क्यों आवश्यक है?

इस का उतर महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि—भाष्य भूमिका में इस तरह दिया है। योगी और सेसारिक मनुष्य जब संसारिक कामों में संलग्न होते हैं तो योगी का मन सदा सुख दुख से उपर उठ कर, आनन्द में प्रकाशित होकर, उत्साह और मस्ती में भरा रहता है। इसके विपरीत संसारिक व्यक्ति, जिसने योगाभ्यास नहीं किया होता, दुख और असफलता में बहुत दुखी हो जाता हैं, और सुख और सफलता में बहुत खुश। कहने का अर्थ है योगी संसारिक वृत्तियों से उपर उठ चुका होता हैं। जब कि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों का दास होने की वजह से अंधकार में फंस कर दुखी रहता है। क्योंकि इस संसार में रहते हुए उंच-नीच, सुख-दुःख, रोग-स्वास्थ्य, समस्याएं-उलझने तो सब कुछ लगा रहना ही है, इसलिये संसारिक व्यक्ति के लिये योगाभ्यास, 'ध्यान' जिस का मुख्य अंग है बहुत आवश्यक है। योगी ध्यान द्वारा यह मालुम कर लेता है कि क्या उसके लिए ठीक है क्या गलत यदि गलत मार्ग पर चला भी जाये तो ध्यान द्वारा यह मालुम होने पर कि यह गलत है, उस को छोड़ देता है। जब कि जो योगी नहीं होता वह इस सोच में चिन्तित रहता है कि क्या करूं।

ऋषि, देवता या महात्मा कौन है?

ऋषि, देवता या महात्मा उन को कहा जाता है जो दूसरों का हित चाहने वाले हों। दूसरों के सुख, कल्याण के लिये बिना इसकी परवाह किये कि दूसरे उसके लिये क्या कर रहे हैं, चाहे कांटे ही विछा रहे हों, लगे रहते हैं। ऋषि, देवता या महात्मा उस बृक्ष की तरह होते हैं जो कि उस की टहनी को काटने वाले को भी छाया प्रदान करता है। वृक्ष जैसे अपना फल आप नहीं खाते, नदियां अपना पानी स्वयं नहीं पीती, ऐसे ही देवता वह है, जो दूसरों के लिए जीता है। आवश्यकता पड़े तो दूसरों के लिए प्राण भी दे देता है।

देवता बनना तो मुश्किल है तो मनुष्य कैसे बनें?

यह सत्य है कि देवता बनना तो मुश्किल है, ऐसे में हम मनुष्य तो बने। प्राणी मनुष्य तभी बन सकता है जब वह संवेदनशील हो, दूसरों से वैसा ही व्यवहार करे जैसा कि वह दूसरों के द्वारा अपने लिये चाहता हो और जो दुखी हैं उनकी सेवा को अपना धर्म मानें। समाज सेवा, दुखी सेवा, लोक सेवा को अपना धर्म बना ले। कोई रोगग्रस्त है तो उसके पास जाकर पूरे यत्न से उसकी सेवा करे। यदि किसी गरीब का वच्चा साधनों के बिना शिक्षा से दूर हो रहा है तो उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करें, पुस्तकें दिलवा दें, वर्दी सिलवा दें। अपने कार्यों द्वारा प्यार के बीज बोओ। लोगों में मिलाप करवाओं।

मनुष्य उसे कहते हैं जो दूसरों के काम आए। जो केवल अपने लिये ही सोचता है, केवल अपने भले के लिये ही यत्न करता है। केवल अपने में ही सीमित है वह पशु है। खाना, पीना, सोना, डरना, सन्तान उत्पन्न करना, अनाज का संग्रह करना, अपने लिये रहने की जगह बनाना, दुख से दूर भागना, सुख के पीछे दौड़ना यह तो पशु भी करता है। मनुष्य भी यदि यही करे तो उस में और पशु में क्या फर्क रह गया।

महात्मा आन्नद स्वामी

कृप्या ध्यान दे ।

हम आपको लोकडाउन व दूसरे कारणों से वैदिक थोटस के चार संस्करण आप तक नहीं पहुंचा सके। हमें खेद है। आपको इन चार महीनों का खुलक नहीं देना है। इस कारण जिन का शुल्क आया हुआ है व जनवरी 2020 से ओं तक था वह चार महीने आगे तक माना जायेगा। उदाहरण के लिये अगर शुल्क फरवरी 2020 तक था जो अब वह जून 2020 तक होगा। धन्याबाद।

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office : H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
- 2- vki psl ; k dsk fuEu cd es tek djok I drs g%&
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

; fn vki cd es tek ugha djok I drs rks di ; k at par dk psl Hkst nA

; k Google Pay No. 9217970381 ; k Paytm No. 9958884557

हमारे भावों व भावों से ही निर्मित होती हैं सभी स्थितियाँ

[hrk]ke x[hrk]



कुछ दिन पहले की बात है दोपहर का भोजन करने के बाद मैंने अपने पौत्र प्रषस्त से अत्यंत स्नेहपूर्वक कहा, “बेटा ये बर्तन आराम से उठाकर सिंक में रख आओ।” उसने बड़ी सहजतापूर्वक बर्तन उठाए और उन्हें सिंक में रखने के लिए चल पड़ा। वह दो कदम ही चला होगा कि तभी घर के एक अन्य सदस्य ने एकदम ऊँची आवाज में उससे कहा, “बर्तनों को पटकना बिलकुल नहीं एकदम आराम से रखना।” अपेक्षित समय के बाद बर्तनों के जोर से पटकने की आवाज़ आई। बच्चे ने जिस सहजता से बर्तनों को उठाया था उससे निश्चित था कि वो उन्हें आराम से रखकर आएगा। लेकिन जब उससे ये भी कह दिया गया कि बर्तनों को पटकना बिलकुल नहीं है तो सारी स्थिति पलट गई। अब उसके पास दो विकल्प हो गए थे। एक विकल्प था आराम से बर्तनों को रखना और दूसरा विकल्प था पटकना नहीं। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि उसके पास दो क्रियाओं के विकल्प थे – रखना और पटकना क्योंकि

हमारे मस्तिष्क के पास निशेधात्मक शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता।

प्रषस्त ने बाद वाला विकल्प चुना और तदनुरूप क्रिया संपन्न कर दी। ये बात भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि उसने बाद वाला विकल्प क्यों चुना? वास्तव में जब हम किसी बात पर जोर देते हैं तो हमारी सारी ऊर्जा वहीं केंद्रित होकर कार्य करने लगती है चाहे वह ग़लत हो या सही। इसीलिए जब भी हम किसी अप्रिय अथवा ग़लत बात का जोरदार विरोध करते हैं तो स्थितियों में कोई अंतर नहीं आता। कई बार हमारे विरोध का प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ता है। विरोध की जाने वाली स्थितियाँ और अधिक उभरने लगती हैं। इसलिए ज़रूरी है कि हम जो नहीं चाहते उस पर जोर डालने की बजाय जो हम चाहते हैं उस पर पूरा ध्यान केंद्रित करें। वास्तव में किसी कार्य को करवाने के लिए हमारे कहने का तरीका और शब्द दोनों ही बड़े महत्वपूर्ण होते हैं। प्रश्न उठता है कि क्या हम कहने अथवा आदेश देने का सही तरीका जानते हैं? क्या आदेश देते समय हम सही शब्दों का चयन व प्रयोग करना जानते हैं?

निस्संदेह हमारे आदेश देने अथवा कहने के तरीके में चूक हो जाती है और इसी चूक के कारण जो हम कहते हैं अथवा करवाना चाहते हैं उसका उलटा हो जाता है। वास्तव में हमें केवल वही कहना चाहिए जो हम करवाना चाहते हैं। हमें केवल वही सोचना चाहिए जो हम जीवन में या विशेष परिस्थितियों में करना या पाना चाहते हैं। जब हम किसी से कोई चीज माँगते हैं तो केवल उस चीज का नाम लेते हैं। मान लीजिए हमें पानी चाहिए तो हम कहेंगे कि मुझे पानी चाहिए या कृपया मुझे पानी दीजिए। यदि हमें पानी चाहिए और हम कहें कि मुझे चाय नहीं चाहिए, दूध नहीं चाहिए अथवा लस्सी नहीं चाहिए तो हमें पानी कैसे मिलेगा? हम पानी को छोड़कर संसार की सभी वस्तुओं का नाम भी ले लें तो भी हमें पानी नहीं मिल सकता। पानी प्राप्त करने के लिए हमें अन्य वस्तुओं का नाम लेने की आवश्यकता ही नहीं। केवल पानी चाहिए कह देना पर्याप्त होगा। आकर्षण के नियम के अनुसार हम जिस चीज की कामना करेंगे वही मिलेगी। हमारा ध्यान जिस चीज पर केंद्रित होगा वही प्राप्त होगी और निश्चित रूप से प्राप्त हो जाएगी।



हम अपनी इच्छाओं के अनुरूप ही वस्तुएँ पाते हैं अतः किसी भी वस्तु को पाने की कामना अनिवार्य है। इस ब्रह्माण्ड में किसी चीज़ की कमी नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी तो यही कहा है – सकल पदार्थ हैं जब माहीं, करमहीन नर पावत नाहीं। षकरखोरे को षकर और टक्करखोरे को टक्कर मिलनी लाज़िमी है। तुलसीदास जब कहते हैं कि करमहीन नर पावत नाहीं तो इसका अर्थ यही है कि हम अच्छाओं की पूर्ति करवाने की सही कला से अनभिज्ञ हैं। हम चाहते कुछ हैं लेकिन हो जाता है कुछ और। कई बार बिलकुल उससे उलट हो जाता है जो हम चाहते हैं। ये सब विचारों का खेल है। सब भावों का प्रभाव है। हम अपने मन में वस्तुओं अथवा स्थितियों की कैसी तस्वीर बनाते हैं वो सबसे महत्त्वपूर्ण है। हम अपने मन में किसी वस्तु के अभाव की तस्वीर बनाते हैं अथवा उसके होने की ये बहुत महत्त्वपूर्ण है।

हम प्रायः जो चीज़ें नहीं चाहते उनकी तस्वीरें अपने मन में बनाए घूमते रहते हैं। जब हम दुकान से सामान लेने जाते हैं तो केवल उन वस्तुओं की सूची बनाकर ले जाते हैं जो हमें लानी होती हैं। इसी प्रकार जीवन अथवा ब्रह्माण्ड रूपी दुकान से हमें जो चाहिए मन में केवल उसकी तस्वीर ही बनाएँ। पैसा किसको नहीं चाहिए। सबको चाहिए और खूब चाहिए। इसमें कोई बुराई भी नहीं। हम प्रायः अपने अभावों की सूची बनाते रहते हैं और सोचते हैं कि ये अभाव मिट जाएँ। इसमें कोई गलत बात भी नहीं है। लेकिन मस्तिष्क तो इसमें अंतर्भेद नहीं कर पाता है। जब हम अपने अभावों के विशय में कल्पना करते रहते हैं तो ये ब्रह्माण्ड उसी स्थिति को बार-बार उत्पन्न कर देता है जिसका प्रभाव ये होता है कि हम हमेशा अभावग्रस्त ही बने रहते हैं। हमें अपने माँगने के तरीके में बदलाव कर लेना चाहिए।

हम जिस वस्तु को पाना चाहते हैं उसके मिलने पर हमें बहुत प्रसन्नता होती है। यदि हम उस वस्तु को पाना चाहते हैं तो हमें प्रसन्नता के उसी भाव को अपने मन में निर्मित करना होगा जो वास्तव में वस्तु के मिलने पर होता है। हम जितनी षिदत से ये कल्पना कर सकते हैं अथवा भावचित्र बना सकते हैं उतनी ही षीघ्रता से वांछित वस्तु हमें मिल जाती है। जीवन के हर क्षेत्र में ये सिद्धांत कार्य करता है। आपसी संबंधों के निर्माण व अच्छे स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो इससे अच्छा तरीका हो ही नहीं सकता। पूरी तरह से स्वस्थ रहने के लिए ही नहीं रोगमुक्त होने के लिए भी हमें अपना संपूर्ण ध्यान केवल अच्छे स्वास्थ्य की स्थिति पर केंद्रित करना चाहिए व वैसा ही भावचित्र निर्मित करना चाहिए। जो व्यक्ति केवल विभिन्न बीमारियों के बारे में सोचते रहते हैं वे स्वस्थ होते हुए भी कई बार घातक व्याधियों से पीड़ित हो जाते हैं। “मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ” केवल एक यही वाक्य और इसकी मानसिक कल्पना अथवा छवि हमारे स्वास्थ्य के क्षेत्र में चमत्कार कर सकती है।

यदि हम चाहते हैं कि लोगों से हमारे संबंध मधुर हों तो हमें ऐसी ही कल्पना में डूबे रहना चाहिए क्योंकि हम जैसी कल्पना करेंगे वैसा घटित होना अवष्यंभावी है। इसके लिए एक ही बात की ज़रूरत है और वो ये है कि हमारा ध्यान केवल अपनी इच्छा के सकारात्मक पक्ष पर केंद्रित हो। यदि मुझे परीक्षा में पास होना है तो मुझे फेल नहीं होना है इस विचार का कोई महत्त्व, औचित्य अथवा उपयोगिता नहीं है। यदि हम अपना सारा ध्यान केवल पास होने के सकारात्मक विचार पर केंद्रित कर दें तो षीघ्र ही ऐसी परिस्थितियों का निर्माण होने लगेगा जो हमें अपेक्षित अध्ययन के लिए प्रेरित कर देंगी। हम जो भी परिणाम चाहते हैं और जैसा भी परिणाम चाहते हैं केवल और केवल उस पर सारा ध्यान लगा देना अपेक्षित व अनिवार्य होगा बाकी सब अपने आप होने लगेगा। जीवन के हर क्षेत्र में पूर्ण सफलता व प्रभावशाली व्यक्तित्व के विकास के लिए हमें हर समय सही व सकारात्मक षब्दों के चयन व उन्हीं के अनुरूप अपने भावों को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

सीताराम गुप्ता,
ए. डी. 106-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323

The spiritualism that leaves a person impractical is not worth practicing

Bhartendu Sood

Mahatma Gandhi as a young boy came in contact with the Jain poet, mystic and philosopher Rajchandraji, sometime in 1991 and he was greatly influenced by him so much so even in his later years he'd revisit his teachings whenever he was in a sort of dilemma.



Long before Gandhi came to be called as a 'Mahatma', he faced a spiritual crisis in South Africa when his Christian and Muslim friends were pressing him to convert to their faiths. During this crucial phase Gandhi sought advice from his spiritual guide, Rajchandraji, in a letter which contained some questions relating to spiritual matters. One of the questions raised by Gandhi was: "If a snake is about to bite me, should I allow myself to be bitten or should I kill it, if that is the only way in which I can save myself?"

Rajchandra wrote back saying that though he would hesitate to advise that he should let the snake bite him, yet, at the same time, it was important to understand that after having realized that the body is perishable, where lies the justification in killing the snake (that clings to its body with love) and in protecting the body that has no value for him?

Rajchandra further said that anyone who wants to evolve at the spiritual level should allow his body to perish in a situation like this. Even for a person who does not desire spiritual welfare, it would not be advisable to kill the snake; the reason being that this sinful act will result in severe punishment to him. However, a person who lacks culture and character may be advised to kill the snake, but we should wish that neither you nor I will even dream of being such a person.

Little wonder that Rajchandra's emphasis on such non-violence later crystallised as the fundamental tenets of Gandhism, which played a significant role in the framing of the policies which harmed the Indian interest. For example, once the division of the country was done on the basis of religion, there was little sense in not allowing the Muslims to move to the newly created Pakistan, a movement which Gandhi spearheaded and madly pursued. He even went to the extent of saying that the Hindus who were there in Pakistan should get themselves butchered there in the hands of Muslims rather than coming to India. This is nothing but allowing the snake to bite.

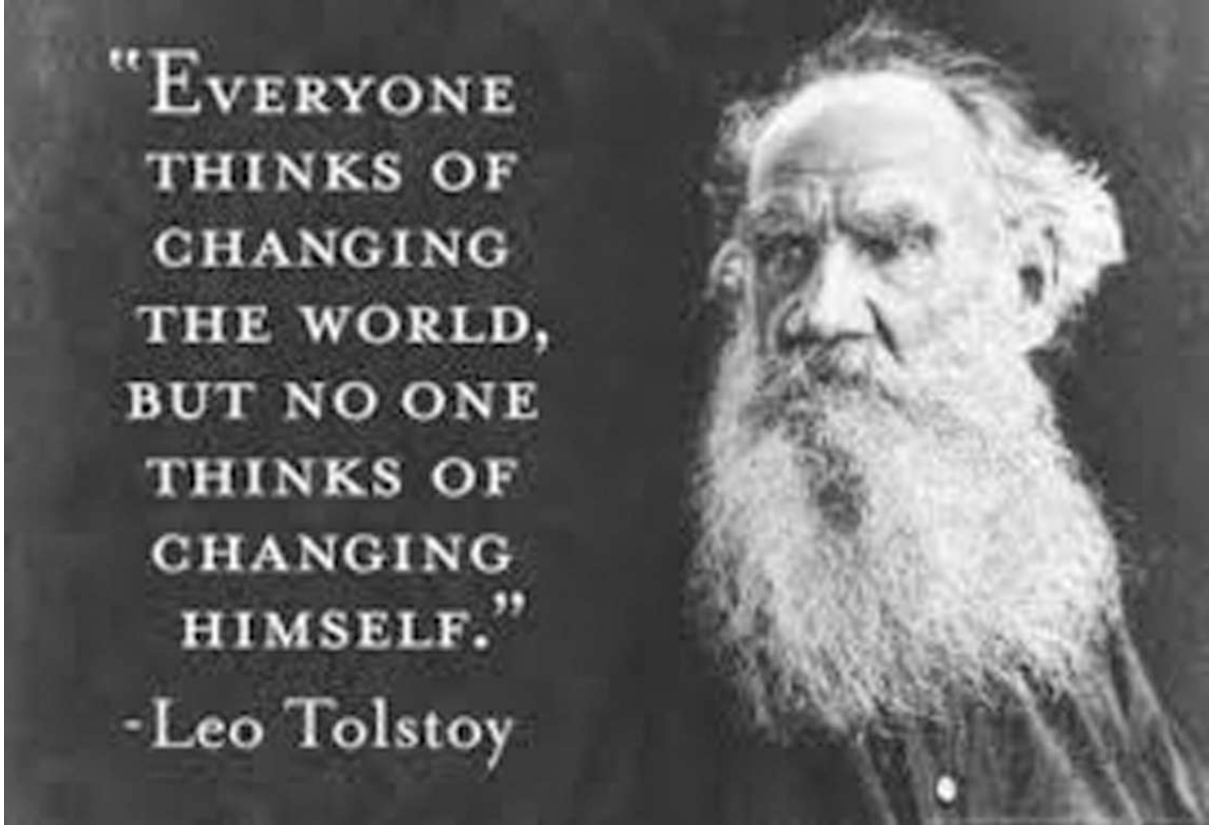
I simply wish Gandhiji had read Non-violence through the lens of Vedas. That non-violence is not a virtue which allows others to harm you. Again that spiritualism is not worth admiring which disrobes a man of his duty.

I will never support this sort of spiritualism. Non-spiritual people like Baba Bhim Rao Ambedkar were any day more practical than Gandhi. He opposed Gandhi tooth and nail in the matter of not allowing Muslims to return to Pakistan.

अध्यात्मवाद और मायावाद में अन्तर

Hkkj rdlng | 11

प्रत्येक वस्तु को आत्मा के दृष्टिकोण से देखना अध्यात्मवाद है। किसी भी कार्य को करते समय यह देखना कि इसको करने से आत्मा का उत्थान है या पतन। और यदि जवाब मिलता है कि इसमें आत्मा का पतन है तो उसे किसी भी हालत में नहीं करना, चाहे उस में करोड़ों रूपयों का लाभ ही क्यों न हो। इसी तरह अगर जवाब मिलता है कि इस में आत्मा का उत्थान है तो उसे अवश्य करना। यह है अध्यात्मवाद।



हर एक चीज को सिर्फ भौतिक लाभ और शारीरिक सुख की दृष्टि से देखना मायावाद है। मायावादी भौतिक लाभ और शारीरिक सुख के लिये यह परवाह नहीं करता कि जो वह कर रहा है वह धर्मानुकूल नहीं है और किसी भी हद तक अपने को गिरा देता है। उसने आत्मा का हनन कर दिया होता है।

क्या अध्यात्मवाद और भौतिकवाद मित्र बन सकते हैं। अवश्य, जब कार्य करने वाला अध्यात्मवाद को भौतिकवाद से उंचा स्थान देकर धर्मानुसार कार्य करे। वेद सौ हाथों से कमाने का आदेश देते हैं और साथ ही संसार के सुखों को भोगने की बात कही गई है परन्तु आसक्त हो कर नहीं, बल्कि त्याग भाव से। जब हम ऐसा करते हैं तो अध्यात्मवाद और भौतिकवाद मित्र बन जाते हैं। वास्तव में कार्य करते हुये धर्म का आचरण ही अध्यात्मवाद को अपने से उंचा स्थान देना है। धर्म के आचरण का अर्थ है सब कार्य धर्मानुसार करना। धर्मानुसार करने का अर्थ है वही करना जो धर्म के अनुकूल है और वह कार्य नहीं करना जो धर्म के विपरीत है। धर्मानुसार क्या है? जो नयाय संगत है, सत्य है, जिस के करने से हम किसी का हक नहीं छीन रहे, किसी से छल कपअ नहीं कर रहे। जिसे करते हुये हमारा व्यवहार वैसा ही है जैसा की हम दूसरे का अपने प्रति अपेक्षा करते हैं

The vedic way of life

Acharya Dr. Umesh Yadav

- 7 Vedic Practices of Highly Successful People
- Yoga for Healthy Body. Advertising. ...
 - Ayurveda for Healthy Lifestyle. Jennifer Aniston, Cameron Diaz, and Gwyneth Paltrow all seem to ooze a vibrant, fresh, happy-in-my-skin look. ...
 - Dhyana for Healthy Mind. ...
 - Pranayama for Healthy Breathing. ...
 - Satsang for Healthy Community. ...
 - Guru for Spiritual Mentoring. ...
 - Ashram for Healthy Retreat.

Isha vasyam idam sarvam, yatkimcha jagatyam jagat. Ten tyakten bhunjitha, ma gridhah kasya swid dhanam.—yajurveda-40/1 This whole circle of nature is fully pervaded by God whatever is in the universe is under existence and control of almighty God. Renounce all that is injustice and enjoy all that is pure delight. Don't covet/grab unjustly the wealth of any creature existing. It means, O men, always enjoy your all justified wealth which is yours in accordance with your practice of righteousness. Here is a great teaching for everyone that no one should be greedy.



God is everywhere and He alone sees our all actions and justifies our fruits as well. So we should be confident on our deeds and satisfied with our achievement of fruits whatever is justified by the supreme Judge/Lord/God. He is our supporter and He is providing us all sustenance through nature what we need. Sometimes we try to snatch the wealth of others as dacoits do and start to think our

rights of others money which is not earned by us. We think only to fulfil our needs/desires but we do not think to make our proper efforts. Veda-Mantra says not to covet the wealth of any others but always think to have as what you have done. CALL-Marks used to say that every one should get according to his needs equally but in fact needs can't be defined and finalized because there are several and different status ,skill and needs of people in this world. It can not be distributed equally to all because all are not of equal status and needs. Some are engineers; some are doctors, professors, lawyers etc. How can it be decided equal needs for all. So friends, we should believe in vedic teaching which is not to snatch the others properties. We have only right to do our duties, rights will meet us automatically by the divine justice. The theory of CALL-Marks became failed because that is wrong. So right principle is which is of Vedas. Vedas teach us not

to think t So right principle is which is of Vedas. Vedas teach us not to think to fulfil one's needs but to believe in deeds. This is the principle which will make us attained peace of mind, peace of societies and peace on nations. So I love to say to remove the word needs to a man be fulfilled and put the word deeds to a man be completed. The snatched money always gives disturbance, fear to use, sufferings, stress and sorrow And earned money will always give you peace of mind, satisfaction, happiness at the time of utilization, distribution and also donation. It is truly written in Rig ved-1/168/3---Hasteshu khadishch kritishch san dhadhe.It means-I hold both rights and duties in my hands. These are also as two sides of a coin. You can't emagin rights without duties and duties without rights. Rights always come out after duties. Yes, in Bhagawad Geeta, it has been told "karmanyevaadhikarastu ma phaleshu kadachan" means you have rights to do, not for fruits. This is actually called the duties without the ambitions of fruits. And this type of duty becomes good deeds and that cause not worldly pleasure but emancipated bliss. So ultimately result will come out of any done work whether you wish or not. Type of results may be different--worldly or Godly. The result of an action can not be denied. This is why, in Atharva Veda, it has been told "Kritam me dhakshine haste, jayo me savya aahita"—means there is duty in my right hand and victory is in my left hand. So both hands are our weapons of life as rights and duties so that we can cut all the roots of sufferings with these two weapons. So, dear audience, be careful and awake and walk towards Vedic knowledge. This will guide you right paths of f life and you will lead your life in happiness and prosperities.

पुस्तक

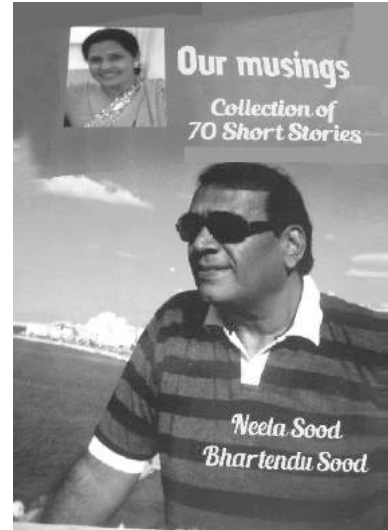
(English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक एकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक एकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

i f=dk ea fn; s x; s fopkjs ds fy, ys[kd Lo; a ftEepkj gA ys[kdks ds VsyhQku u- fn, x, gS
u; kf; d ekeyks ds fy, p.Mlx<+ ds u; k; y; eku; gA

क्यों समय से पहले मृत्यु दुखदाई होती है

Hkkj rđng | 11

वेदों में विभिन्न मन्त्रों में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हम सौ वर्ष से भी उपर जीयें। जीयें भी इस तरह की हम स्वस्थ रहें, हमारी सभी इन्द्रिया और अंग कार्य करते रहें। सब से बड़ी बात हम स्वावलम्बी रहें, यानी कि अपनी आवश्यकताओं के लिये किसी पर भी निर्भर न करें।

कहने का अभिप्राय यह है कि मृत्यु तो निश्चित है परन्तु इस मनुष्य चोले का सुख कम से कम सौ वर्ष तक अवश्य प्राप्त करें। हम इस बात को इस उदाहरण से समझ सकते हैं। मान लो हम रेल गाड़ी में बैठे हैं व हमारा गणतव्य 100 कीलो मीटर पर है। आप की गाड़ी अभी 50 कीलो मीटर पर ही पहुंची है कोई स्टेशन आता है और आप बाहर निकल कर जाते हैं, बापिस आतें हैं तो आप की सीट पर कोई दूसरा व्यक्ति बैठा हुआ है, आपको दुख व हैरानगी दोनों होंगे। अब आप दूसरी स्थिति लें, आप की गाड़ी अपने गणतव्य पर पहुंचती है, ऐसी स्थिति में आप बिना किसी के कहे स्वयं ही अपना स्थान छोड़ कर खुशी खुशी बाहर आ जायेंगे। आपको अपनी सीट छोड़ने में दुख नहीं, परन्तु खुशी है। यही हाल मृत्यु का है। यदि समय से पहले ईश्वर का बुलावा आता है तो आप भी दुखी होते हैं और आप के प्रियजन भी परन्तु यदि व्यक्ति पूरी आयु काट कर मृत्यु को प्राप्त होता है तो किसी भी प्रकार का दुख नहीं होता। कुछ समय पहले तक जब किसी बजुर्ग की 80 साल की आयु प्राप्त करने के बाद मृत्यु होती थी तो बैंड बाजे के साथ उसका संस्कार करने ले जाते थे। मेवे बांटे जाते थे। यह इसी बात का सूचक है कि पूर्ण आयु प्राप्त करने के बाद मृत्यु दुख नहीं अपितु सुखदाई है, स्वयं मरने वाले के लिये भी व उसके प्रियजनों के लिये भी।

उसके विपरीत समय से पहले मृत्ये मरने वाले के लिये भी दुखी दाई हैं और आप के प्रियजन भी। आप पूछ सकते हैं कि मरने वाले के लिये कैसे। मानों एक युवक ऐसी बिमारी से ग्रस्त हो गया जिसका ईलाज नहीं व मृत्ये उस को नजर आ रही है, ऐसे में वह स्वभाविक तौर पर दुखी होगा व प्रियजन भी। जब तक उसकी मृत्ये नहीं हो जाती वह

समय बहुत दुखदाई होता हैं। एक प्रश्न यह भी आता है कि जब व्यक्ति बृद्ध हो गया है, बिमार रहता है। हर चीज के लिये यहां तक कि अपने मल मूत्र से निवृत्त होने के लिये भी पूरी तरह दूसरों पर निर्भर हो गया है, ऐसे में मृत्यु सुखदाई है चाहे व्यक्ति की आयु अभी पूरी न भी हुई हो। यह एक किसम की मुक्ति है।

आजकल आत्महत्या की घटनाये बहुत बढ़ गई हैं। प्रश्न है कि इसको अध्यात्मिक रूप से कैसे देखा जाये। पहली बात जो सामने आती है कि मनुष्य का जीवन देने वाला वह ईश्वर है, ऐसे में जीवन लेने का अधिकार भी उसी को है। जो ईश्वर को करना था यदि वह मनुष्य स्वयं करता है तो यह ईश्वर का घोर अपमान है। फिर क्या उस व्यक्ति को मानव का अमूल्य जीवन मांगने का अधिकार है। मेरा मानना है कि बिल्कुल नहीं।

बहुत से लोग यह समझते हैं कि महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करने से आये बढ़ती है। वे शायद इस मन्त्र के अर्थ को नहीं समझते, इस मन्त्र का अर्थ यह है कि हे ईश्वर, जैसे पक्का हुआ खरबुजा डाल से स्वयं अलग हो जाता है, वैसे ही जब मैं पक्क जाऊं अथार्त मैं पूर्ण आयु को प्राप्त कर लूं तो मुझे मृत्ये का दान देकर मुक्ति दें। इसलिये महामृत्यंजय मन्त्र को जीवन में समझने की आवश्यकता है न ही पाठ करने की है। जब शरीर दुख दर्द का कारण बन जाये तो मुक्ति ही ठीक है, ऐसी मृत्यु से दुख नहीं होना चाहिये।

सात्विक दान क्या है

uhyk | n

अभी हाल में केरल के एक छोटे शहर में समुद्री तूफान व कोविड से प्रभावित व्यक्तियों के निये खाने के पैकेट तयार करने वाली एक महिला कर्मचारी के दिल में प्रभावित लोगों की सहायता करने का विचार आया। बस क्या था, उस ने एक पैकेट में कागज में लिपेटकर 100 रुपये का नोट इस विचार से डाल दिया कि जिस किसी को भी मिलेगा, उस परिवार में किसी आवश्यक वस्तु को खरीदने के काम आयेगा। यह खाने का पैकेट उस स्थान पर ड्यूटी पर तैनात एक पुलिस सिपाही के हिस्से आया, उसने खोला तो सौ रुपये का नोट भी था। उसने फेस बुक पर उसे डाल दिया और जब बात आगे बढ़ी तो पता लग गया कि उस महिला ने किसी अनजान जरूरतमन्द की सहायता के लिये डाल दिया था। देखने वाली बात यह है कि वह 56 वर्षिय महिला एक टेकेदार के पास कार्यरत है जो कि रोजाना भते की नौकरी है, उस का पति नौका ठीक करने का काम करता है। ऐसी महिला जिस की आमदनी कुछ भी नहीं है, वह अपने से अधिक जरूरतमन्दों की सहायता करना चाहती है परन्तु दिल में वाहवाही की कोई इच्छा नहीं।

केरल की एक कम्पनी को जब इस बात की जानकारी हुई तो उसन उस महिला को एक लाख रुपये की ईनाम राशी दी व प्राशंसा पत्र दिया। यह है सात्विक दान न कि इस बात का दुडोरा पीटे की हमने 150 देशों की सहायता की।

अभी हाल में ही राजकोट गुजरात में एक और ऐसी ही सुखद घटना देखने को मिली। एक कार में परिवार के पांच सदस्य जा रहे थे, मूसलाधार बारिष हो रही थी, ऐसे में उनकी कार एक नाले में गिर गई। पास के ही एक पेटोल पम्प से कुछ व्यक्ति वहां आ गये। इतने में न जाने कहां से एक साईकल पर सवार व्यक्ति ने यह देख लिया, वह पानी में कूद गया, उसने परिवार के चार सदस्यों को बारी बारी से तेज पानी से बाहर निकाल दिया परन्तु एक बच्ची को न निकाल सका और बापिस आ गया। सभी लोग उन चार को जो बच गये थे, उपचार करने में लग गये। कुछ देर बाद देखा तो न तो वह इन लोगों की जान बचाने वाला व्यक्ति वहां था न ही उसका साईकल। सच्च कहा है—कई बार इस दुनिया में यारो ऐसे फरिशते भी आते हैं अपना सब कुछ देकर खाली हाथ चले जाते हैं। न तो उनको नाम की ईच्छा होती है और न ही ईनाम की।

दान हो या सेवा, यदि निस्वार्थ है तो सब से उत्तम है व सात्विक।

राजा राममोहन राय - धार्मिक और सामाजिक सुधार के प्रथम योद्धा

d".k plnz xxl

राममोहन राय का जन्म 1772 में बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में हुआ था। वे बड़े मेधावी थे और स्वतन्त्र विचारक थे। 15 वर्ष की आयु तक उन्होंने बंगला, परशियन, अरेबिक और संस्कृत भाषाएं सीख ली थीं। 22 वर्ष की आयु में उन्होंने अंग्रेजी भाषा भी सीख ली थी। उन्होंने काशी में जाकर वेदों और उपनिषदों का अध्ययन किया। उन्होंने ईशोपनिषद, कठोपनिषद और मुण्डक उपनिषद का अनुवाद किया। एक मुगल शासक ने उनको 'राजा' की उपाधि दी थी।

राममोहन राय हिन्दुओं में प्रचलित पूजा-पाठ, रस्म-रिवाजों, अन्धविश्वास आदि कुरीतियों के कट्टर विरोधी थे। उनके पिता पक्के वैष्णव ब्राह्मण मत का पालन करने वाले थे। इसलिए राममोहन राय के विचार उनके पिता से मेल न खाते थे। बढ़ते विरोध के कारण राममोहन राय ने घर छोड़ दिया। तब उन्होंने तिब्बत, हिमालय आदि स्थानों का भ्रमण किया। बीस वर्ष की आयु में वे वापिस घर लौट आए थे।

राममोहन राय एक ईश्वर को ही सृष्टि का रचयिता मानते थे। वे बहुदेवतावाद को गलत मानते थे तथा मूर्तिपूजा का खुलकर विरोध करते थे। 16 वर्ष की आयु में उन्होंने एक पुस्तक मूर्तिपूजा के खण्डन में लिखी थी, जो छपी नहीं थी। उन्होंने लोगों को अपनी तर्क शक्ति और विवेक को विकसित करने का सुझाव दिया। वे लिखते हैं- "1803 में पिता की मृत्यु के पश्चात मैंने मूर्तिपूजा के पक्षपातियों का और अधिक बल से विरोध किया। उनकी भूल दर्शाने के लिए मैंने देशी और विदेशी भाषाओं में कई पुस्तकें - पुस्तिकाएं लिखीं।"



राममोहन राय ने महिलाओं के उद्धार के लिए एक बड़ी मुहिम चलाई। उनकी पत्नी की बहिन जब सती हुई तब वे बहुत विचलित हुए। सतीप्रथा, बालविवाह तथा बहुविवाह के वे कट्टर विरोधी थे। विधवा विवाह के वे पक्षधर थे। महिलाओं की शिक्षा के लिए भी वे प्रयत्नशील थे। उनके प्रयासों से गर्वनर जनरल ने बंगाल में 1829 में सतीप्रथा को अपराध मानने वाला कानून बनाया था।

राममोहन राय ने जन्मगत जातपात को अनुचित बताया। इसके कारण समाज में आई असमानता को उन्होंने घातक पाया। वे मानते थे कि हर कोई परम पिता परमात्मा का पुत्र या पुत्री है। इसलिए समाज में कोई भेदभाव न होना चाहिए। समाज में घृणा को कोई स्थान नहीं है। इस कारण से वे उच्च वर्ण के लोगों की आँख में खटकने लगे थे।

राममोहन राय ने उस समय की स्थिति को समझा। वे अंग्रेजी भाषा की शिक्षा के पक्षधर थे। उन्होंने लार्ड मैकाले की नई शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया था। वे अंग्रेजी भाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा से भारत का वैचारिक और सामाजिक विकास मानते थे। शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने कलकता में हिन्दू कालिज की स्थापना की थी और अंग्रेजी भाषा के कुछ स्कूल भी खोले थे।

राममोहन राय ने हिन्दुओं में धार्मिक और सामाजिक सुधारों के लिए ब्राह्मसमाज नाम की संस्था की स्थापना की जिसके निम्नलिखित सिद्धान्त बनाए गए -

1. वेदों और उपनिषदों को मानना चाहिए।
2. इनमें एक ईश्वरवाद का प्रतिपादन है।

3. मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध होने से त्याज्य है।
4. बहुविवाह, बालविवाह, सतीप्रथा आदि सब वेद विरुद्ध हैं, इसलिए त्याज्य हैं।

पहले उन्हें अंग्रेजी राज्य से घृणा सी थी। बीस वर्ष की आयु में वापिस घर आने पर उनका संसर्ग योरोपियन लोगों के साथ होने लगा। तब उनके मन में उनके प्रति घृणा जाती रही। एक पत्र में वे लिखते हैं “जब मुझे ज्ञात हुआ कि अंग्रेज लोग प्रायः अधिक बुद्धिमान, अधिक धैर्यवान और सुशील हैं तब उनके प्रति मेरी घृणा जाती रही और मैं उनके पक्ष में हो गया। मुझे प्रतीत होने लगा कि उनका राज, विदेशी जुआ होते हुए भी, देशवासियों की स्वतन्त्रता का शीघ्र और आवश्यक साधन हो सकेगा।”

जब ईसाइयों ने तन्त्रों और पुराणों के अनुसार ईश्वर के अवतार होने की आलोचना की तब राममोहन राय ने लिखा – “तुम लोग हिन्दुओं के अवतारों पर आक्षेप करते हो, परन्तु क्या तुम ईसा को, जो मनुष्य के रूप में था और पवित्र आत्मा को जो पक्षी के रूप में थी, ईश्वर नहीं मानते हो? क्या तुम नहीं मानते कि ईसामसीह खुदा ही था? क्या ईसामसीह में दुःख-सुख, क्रोध आदि मनुष्य के गुण नहीं थे? क्या पक्षी रूप में उस पवित्र आत्मा ने स्त्री के संयोग से ईसा को पैदा नहीं किया था? यदि ईसाई लोग इन बातों को मानते हैं तो वे पुराणों की बातों पर कैसे आक्षेप कर सकते हैं? पुराणों में जो बातें वेद-विरुद्ध हैं उन्हें हिन्दू नहीं मानते, परन्तु ईसाइयों की तो बाइबल ही वेद है।” राममोहन राय ने ईसाइयों से निम्नलिखित प्रश्न किए—

1. तुम ईसा को ईश्वर भी मानते हो और ईश्वर का बेटा भी। बेटा बाप कैसे हो सकता है।
2. तुम कभी ईसा को मनुष्य का बेटा कहते हो। फिर कहते हो कि कोई मनुष्य उसका बाप नहीं था।
3. तुम कहते हो ईश्वर एक है। फिर भी कहते हो कि बाप ईश्वर है, बेटा ईश्वर है और पवित्र आत्मा ईश्वर है।
4. तुम कहते हो ईश्वर की पूजा करनी चाहिए, फिर भी तुम शरीरधारी ईसा को पूजते तो।

1830 में राममोहन राय इंग्लैण्ड गए। वहीं पर 27 सितम्बर 1833 को उनका देहान्त हो गया।

Eyes that read the mind

Neela Sood

The friendship between Shri Krishna and his school time buddy Sudama is an immortal example of real and non-materialistic friendship. But, the incident involving reunion of school time friends after many years of separation has a deeper message than what meets the eyes.

Sudama who was leading a life of penury, was sent by his wife to Lord Krishna, who happened to be a king of Dwaraka, to seek material help so that they could have dignified living. Despite of the huge difference in their social status, on reaching at Shri Krishna's place, Sudama not only received red carpet welcome but was accorded royal treatment and hospitality which continued for months. But, even this bonhomie could not make him disclose his real mission to Krishna fearing that it might bring him down in latter's eyes as motive of his visit might be seen as personal need. Then a day came when Sudama decided to return. On his way back home, he was at a loss to know what explanation he'd give to his wife who must be eagerly waiting for the good news. But on reaching his village he was stunned to see everything changed. There was a palace in place of his thatched house with all luxuries of life. Pleasantly surprised and full of gratitude Sudama said to his wife, "Beloved one! Believe me I never asked Krishna for all these things." His wife replied, "Noble souls have the eyes that read the mind and know the needs of the people who approach them."



Likewise there is a story about Poland's famous piano player Ignacy Jan Paderews who later became the Prime Minister of his country. A group of students wanted to raise funds for the underprivileged so they invited Ignacy and promised him huge money for his concert. But, unfortunately the show flopped and collection was not even 25% of what they had estimated. Organizers approached Ignacy with a Cheque for much smaller amount and promised to pay the balance with in a year. Ignacy smiled and then took out a cheque from his Brief Case and handing over that along with the cheque he had received from them, said to the organizer, "I always knew that in this sleepy town where people struggle for a square meal, not many can afford Piano concert but looking at your high spirits and noble cause I decided to make it but with a little financial help from my side."

It is a fact that people who have empathy, love and compassion and are sensitive with a capacity to think about others irrespective of their own status, have the eyes that can read the mind. Don't mothers come to know about the problems children face even

FEED BACK FROM THE READERS

Dated - 19/10/2020

Complex

Chandigarh

House no 6026, (duplex)
Modern Housing

Manimajra, UT

Pin code - 160101
Mobile - 8559089144

To

Bhartendu Sood
Editor, Vedic Thoughts
#231, sector 45-A, Chandigarh

Sir,

In reference to your editorial, published in "Vedic Thoughts" of August 2020, I send reply verbatim which may be published in the next issue of your monthly magazine.

CRITICISM OF MODI GOVERNMENT NOT SUSTAINABLE

At the outset of the editorial, you have levelled allegation that the media is largely controlled by the government. Your this assertion is wrong and does not carry any weight. You honestly point out which print media, TV, mobile talk or any other device has ever felt any pinch of government interference. Bashing of Modi government on baseless propaganda is of no use and does not serve anybody's interest.

You have expressed concern about the sagging state of economy in the country which has been shown with GDP growth as -23% and that of China at +3.5%. All this has happened due to the pandemic COVID 19 which is not the government's fault, as this is the situation in the whole world. I assume that the figure of +3.5% and -23% are of ending the first quarter of the year. Now the statistics of second quarter ending September 2020 are available which point out a horrible scene of the whole world economy including that of India. A few days back, Times of India and organiser, an Indian weekly from Delhi reported that GDP growth of Singapore at -42%, that of Canada -38%, USA -32%, UK -22.8% and Spain -21% and so many other countries which have been badly affected by the coronavirus.

Your insinuation that everybody in the country is afraid of admiring China, does not carry any substance. Anybody including you, can sing paeans in the praise of Xi Jin Ping who is otherwise

one of the most cunning and wicked leaders in the eyes of most of the countries of the world. You applaud and extoll about Imran Khan and Xi Jin Ping freely; nobody bothers and prevents you from doing so. You further say that Pakistan has managed COVID-19 far better than our PM Modi. But remember that Pakistan is exactly the size of UP; compare the figure of corona pandemic in Pakistan and of UP alone and then reach the conclusion. Nobody will label you anti national and praise Imran Khan as much as you like but do not misinterpret the application of Article 19 of the constitution, as it has never been used by Modi government for petty issues like the ones you are pointing.

I think you have a lot of grudge and feel very much annoyed why India considers China and Pakistan as enemies. No. 1 There are over 200 countries in the world. You know well that except a few which can be counted on fingers, all the the other countries consider them as their foes. As regards our relations with other countries, you unnecessarily seem to have sarcastic and sardonic view about Modi government. No government other than NDA has ever tried so much to build friendly relations with them but unfortunately they have fallen prey to China and show scant respect for India.

In the next paras you have tried utmost to highly eulogise Xi Jin Ping of China and to denigrate our PM to the maximum sans any solid reason. I do agree that imposition of lockdown to control spread of COVID 19, was unjustified to some extent which has done irreparable damage to our economy. Saving of human lives at such a heavy cost involving lakhs of crores of rupees, was not a wise decision. Regarding the comparison between the working of China's head and of our PM, factual position has been knowingly ignored. China's president Xi Jin Ping is a dictator and not answerable to anybody. On the other hand, our PM has to perform his duties under extreme difficult circumstances and stiff opposition from a large number of political opponents who seem to have no other job but to bash, blame, accuse and abuse him all 24 hours. China's head does not care about anybody in the country whereas our PM has to defend himself from the onslaught of so many opposition enemies who have never cooperated with him on any subject. Introduction of demonetisation and GST were long awaited and right decisions to bring the system on right path. Of course public had to face problems in the first few months and then the situation became normal.

It is unfortunate that the gigantic works like completion of longest bridge on river Brahmaputra, construction of around 40,000 km national highways and equal number of village and link roads, inauguration of Atal tunnel, building longest highway of 258 km at the highest hilly area of Ladakh, opening of Kartarpur corridor, construction of 8 crore toilets in villages, providing an equal number of free gas connections to the downtrodden, giving crores of built up houses to downtrodden, granting crores of free electricity connections to poor in urban and rural areas et al, are not visible to your eyes and you seem to be concerned only in finding faults with Modi. Further you have stated that the working of Dr. Manmohan singh was far better than of PM Modi. It may be true to some extent due to favourable circumstances prevailing at that time. People hold Dr. Manmohan Singh in high esteem because he is one the top most economists, and thorough gentleman and soft spoken. But he definitely marred the dignity and prestige of PM

office. He could never work with a free hand. It may be his weakness that he did not function with his own will and determination. He had to work under the instructions of the trio (mother, son and the third person everybody knows). During the tenure of UPA, particularly UPA II, news were galore that his ministers did not care about his orders and even did not attend his telephone calls. How unfortunate it was. Had there been PV Narsimha Rao, Atal Bihari Vajpayee or Modi the disobedient would have been shown the door before his leaving the office in the evening. Moreover, in UPA, the entire system was considered as the most corrupt. It is the good fortune of the country that it has got such a bold, dynamic, hardworking, untiring man of actions and a strong leader as PM after 70 years. He has no interest of his own, works 20 hours in the day, always thinks about the welfare and development of the country, whom the leaders of the world hold in high regard except China and Pakistan. He may have some shortcomings which every human being has otherwise no person can raise finger about his honesty, integrity, bravery and courage.

In a recent article published in TOI (15th October 2020, p6) Sri Arvind Panagariya, a professor of economics at Columbia University has rated him as the best PM for his national and international performance among PV Narsimha Rao, Atal Bihari Vajpayee and Dr. Manmohan Singh.

Instead of severely criticising him all the time, see his good qualities and shed hatred about Modi. Also remember so long as Modi and BJP are there at the helm of affairs, you are safe and secure; the moment he leaves the scene, in a decade or two thereafter the country would be converted into an islamic state and christianity and it would become difficult for you all to live and breathe here.

Thanking you.

Yours sincerely

T.R.Goyal

Criticism of Modi Government not sustainable?

Dinesh Sud

I have been tasked by the editor to give my views on the letter by Sh. TR Goyal on the above subject. Due to limited space provided to me, I would confine myself to main points.

1. Media is not controlled by the government: Legally, it is true but anybody who watches channels like Zee TV, India TV, Republic TV, India Today, AajTaketc.can very well understand whose paeans they are singing day in and day out. A neutral observer can be excused for thinking that these channels are owned by BJP, if not by Mr. Modi himself. Non-stop coverage of suicide of a non-entity like Sushant Rajput while relegating important issues like 23% contraction in GDP and almost a thousand Covid deaths per day to the background, was

nothing if not diversionary tactic to avoid bad press for the government. If a foreigner had listened to all the hoopla during that period, he would have thought: "Wow! This guy Sushant must be a bigger entity than even Mahatma Gandhi." And mind you, conscious of the same press, that cried hoarse to bring to justice the imagined killers of a privileged kid for more than a month, was sleeping the when the poor migrant workers were dying due to negligence of the government.

2. Sagging economy:

It is true that almost every country in the world has suffered severe contraction due to Covid. But the GDP contraction numbers quoted by Mr. Goelfor USA, Canada, Singapore, Spain etc. are not correct. Wishy-washy numbers from some local newspaper or local magazines cannot be depended form the basis of a well-informed discussion. There is a misinformation campaign in the media to confuse quarterly numbers with annualized numbers to show other countries in poor light. Let us see **latest projections** from IMF for GDP growth for major economies and our neighbors for the year 2020:

S. No	Country (Sorted from the worst to the best)	GDP Growth Projection 2020 by IMF
1.	Spain	-12.8%
2.	India	-10.3%
3.	UK	-9.8%
4.	France	-9.8%
5.	Canada	-7.1%
6.	Germany	-6.0%
7.	Singapore	-6.0%
8.	Japan	-5.3%
9.	Brazil	-5.8%
10.	Sri Lanka	-4.7%
11.	USA	-4.3%
12.	Australia	-4.2%
13.	Russia	-4.1%
14.	Pakistan	-0.4%
15.	South Korea	-1.9%
16.	Indonesia	-1.5%
17.	Bhutan	-0.6%
18.	Nepal	0
19.	China	+1.9%
20.	Bangladesh	+3.8%

Latest projections are available from IMF site www.imf.org/external/datamapper/
Position of India in the table is hardly flattering, particularly when compared to our neighbors, all of whom did much better on tackling Covid than us, even on the most important parameters of Covid cases and deaths per million of population.

1. And what about GDP growth before the Covid crisis? In 2019-20, India's GDP growth was a tepid 4.2%, lowest in 11 years. India's economy under a strong Mr. Modi is, quarter on quarter, growing slower than under a weak Manmohan Singh. Whom should we blame that for?

2. Modi vs Xi Jining: Yes, no doubt that Mr. Xi Jining is a dictator but who says that a dictator has an advantage in the matter of economic or socio economic performance? If this were true, China should have grown leaps and bounds under the most ruthless dictator, Mao Tse Tung. It is not dictatorship that determines economic wellbeing of a country but the economic policies of the leaders. USA being biggest democracy and almost as noisy as India, is an economic superpower despite powers of President curbed by Congress and reined in by troublesome press and the courts. What determines economic welfare is the policies adopted by the leaders, not infinite power of the leader. Indira Gandhi was any day stronger than Narshima Rao. But India could not prosper economically under her leadership whereas Narshima Rao, even without majority at his command, gave a new direction to our country.

3. Mr. Modi is an honest leader: Yes, even his most bitter critic will agree that at personal level, he is a very honest politician. And he is reaping the benefit of that. But a leader needs more than personal honesty and hard work to lead a nation.

4. Lastly, Mr. Goel cites Demonetization and GST as much needed reforms in right direction. Calling demonetization a reform is a joke. It derailed our economy and failed miserably to account for black money when almost all the black money found its way back to the banks. GST was a wasted opportunity. We all know that GST is in shambles due to Covid but even before that GST collection was nowhere near its target, forcing the govt to impose cess to compensate states. And what do you call a so called land mark reform has been amended umpteen number of times since its introduction? These so called land mark reforms and imposing Covid at four hours' notice are typical of the leadership style of our honorable Prime Minister – Announcements with big fan-fare without detailed planning and then defending the undependable.

Mr. Manmohan Singh could not perform to his full potential due to frequent interference in policy matters by the Madam. Mr. Modi is performing beyond his capacity because there is absolutely nobody to question him in the party, the press or the government.

“संकल्प-- एक अदभुत शक्ति”

मानव ईश्वर की अनमोल कृति है। लेकिन मानव का सम्पूर्ण जीवन पुरुषार्थ के इर्द गिर्द ही रचा बसा है। गीता जैसे महान ग्रन्थ में भी श्रीकृष्ण ने मानव के कर्म और पुरुषार्थ पर बल दिया है। रामायण में भी आता है 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' अर्थात् बिना पुरुषार्थ के मानव जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं, जो पुरुषार्थ के महत्व को प्रमाणित करते हैं। हम इतिहास टटोलकर देखें तो ईसा मसीह, सुकरात, अब्राहम लिंकन, कार्ल मार्क्स, नूरजहाँ, सिकंदर आदि ऐसे कई उदाहरण इतिहास में विद्यमान हैं, जिन्होंने अपने निजी जीवन में बहुत से दुःख और तकलीफें झेलीं। इनके जीवन में जितने दुःख और परेशानियाँ आईं, इन्होंने उतनी ही मजबूती के साथ उनका मुकाबला करते हुए न केवल एक या दो बार बल्कि जीवन में अनेक बार उनका डटकर मुकाबला किया और अपने प्रबल पुरुषार्थ से उन समस्याओं और दुःखों को परास्त करते हुए इतिहास में अपना एक सम्माननीय स्थान बना लिया।

अब्राहम लिंकन का नाम कौन नहीं जानता। जिस काम में भी उन्होंने हाथ डाला उसी में असफल हुए। रोजमर्रा के निर्वाह हेतु एक दूकान में नौकरी की तो दूकान का दिवाला निकल गया। किसी मित्र से साझेदारी की तो धंधा ही डूब गया। जैसे तैसे वकालत पास की, लेकिन वकालत नहीं चली। चार बार चुनाव लड़े और हर बार हारे। जिस स्त्री से शादी की उसके साथ भी सम्बंध बिगड़ गये और वह इन्हें छोड़कर चली गयी। जीवन में केवल एक बार उनकी महत्वाकांक्षा पूरी हुई, जब वे राष्ट्रपति बने और इस सफलता के साथ ही वे विश्व इतिहास में अमर हो गये।

सिकंदर फिलिप का पुत्र था कहा जाता है कि सिकंदर की माँ अपने प्रेमी के प्रणय जाल में इतनी अंधी थी कि उसने अपने पति फिलिप को धोखे से मरवा दिया और सिकंदर का भी अबेहलना की। मगर सिकंदर का इतना प्रबल पुरुषार्थ था कि उसने अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिणित कर दिया। विख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइन जिसने परमाणुशक्ति की खोज की, वे बचपन में मूर्ख और सुस्त थे। उनके माता-पिता को चिंता होने लगी थी कि यह अपना जीवन कैसे चला पायेगा। लेकिन जब उन्होंने प्रगति पथ पर बढ़ना शुरू किया तो सारा संसार चमत्कृत हो गया।

एक मूर्तिकार का बेटा जो देखने में बड़ा कुरूप था उसने अपने जीवन की शुरुआत एक सैनिक के रूप में की और बहुत छोटी उम्र में उसके पिता का साया उसपर से उठ गया। अब उसकी माँ ही थी जो अपने पुत्र और अपने जीवन का निर्वाह दाई का कम करके करती थी। यही कुरूप बालक आगे चलकर सुकरात के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसने अपने पुरुषार्थ से दर्शनशास्त्र के जनक की उपाधि प्राप्त की।

ईसामसीह जिनके आज दुनिया में एक तिहाई अनुयायी हैं उनका जन्म एक बड़ई के घर में हुआ, लेकिन ईश्वर में अपनी आस्था और विश्वास के द्वारा श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हुए सभी विघ्न बाधाओं को काटते हुए वे एक महामानव बने और लोगों के लिए सत्य का मार्ग अवलोकित कर गये।

भारत वर्ष को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म भी एक दासी से हुआ था। लेकिन उसे चाणक्य जैसे गुरु मिले और उनके बताये रास्ते पर चलते हुए वह अपने पराक्रम और पुरुषार्थ के द्वारा राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में सफल रहा।

प्रसिद्ध विचारक और दार्शनिक कन्फ्युशियस को तीन वर्ष की छोटी-सी उम्र में ही पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा था। अपने पिता को वो अभी ठीक प्रकार से पहचान भी नहीं पाया था कि वह अनाथ हो गया और छोटी सी उम्र में ही उसे जीविकोपार्जन के कार्य में लगाना

पड़ा। लेकिन बड़ा बनने की इच्छा उसमें प्रारम्भ से ही थी। यद्यपि 19 वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हो गया और तीन संतानों के साथ बड़ी गरीबी में उसने जीवन जिया, लेकिन अपने पुरुषार्थ और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण उसने चमत्कार कर दिखाया और महान दार्शनिक कहलाया।

कार्ल मार्क्स यद्यपि गरीब था और मरते तक उसने तंगहाली में ही जीवन जिया, लेकिन अपनी संकल्प शक्ति और दृढ़ विचारों द्वारा दुनिया के करोड़ों लोगों को अपने भाग्य का विधाता आप बना गया। उसने अपनी पुस्तक 'दास कैपिटल' को सत्रह बार लिखा, अठारवीं बार में वह अपने उदात्त रूप में निकलकर बाहर आई और साम्यवाद की आधारशिला बन गयी।

अपनी संगठन शक्ति, दूरदर्शिता, दावपेंच और सीमित साधनों के बल पर औरंगजेब को नाकों चने चबवाने वाले शिवाजी के पिता शाहजी एक रियासत के दरबारी थे। शिवाजी को अपने पिता का किसी प्रकार का सहयोग या आश्रय नहीं मिला। उनका साहस केवल माता की शिक्षा और गुरु के ज्ञान पर टिका हुआ था। वे साहस और पराक्रम के बल पर स्वराज्य के लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ते गये एवं यवनों से जूझकर छत्रपति राष्‍ट्राध्यक्ष बने।

हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के एक छोटे से गांव के गरीब परिवार में पैदा हुये। एक प्रचारक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया। सन 2000 तक उन्होंने कोई पद नहीं सम्भाला था। गुजरात के मुख्य मन्त्री बनाये गये पर कुछ ऐसी परिस्थितियां बन गई कि सब रातनैतिक दल यहां तक की उनके अपने दल के भी बहुत सारे नेता भी उनके शत्रु बन गये। सारा मिडिया उनका सख्त विरोद्धि था पर मोदी अपनी संकल्प शक्ति से न केवल सफल मुख्य मन्त्री बने रहे परन्तु अपनी पार्टी के दिग्गजों को ही पीछे छोड़ प्रधानमंत्री पद के दावेदार बने। इस में कोई सनदेह नहीं किये श्रीमती इन्दिरा गांधी को छोड़ सब से कामयाब प्रधानन्त्री है और विश्व की राजनिती में उनकी पहचान है।

सच्‍मुच संकल्प एक एकसी शक्ति है जिस के बिना काही गुण धरे के धरे रह जाते हैं। बौर अगर संकल्प आप का दृढ़ है तो थोड़े साधनों के साथ भी आप विजय ध्वज लहरा सकते हैं जैसा कि महाराणा प्रताप ने अकबर के वि का दिखाया था। दृढ़ संकल्प वाला अनुकूल परिस्थितियों की बात नहीं देखता, संकल्प प्रतिकूलताओंसे टकराना और अंदर छिपी सामर्थ्य को उभार कर आशातीत सफलता हर प्राप्त करने का मार्ग है

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671

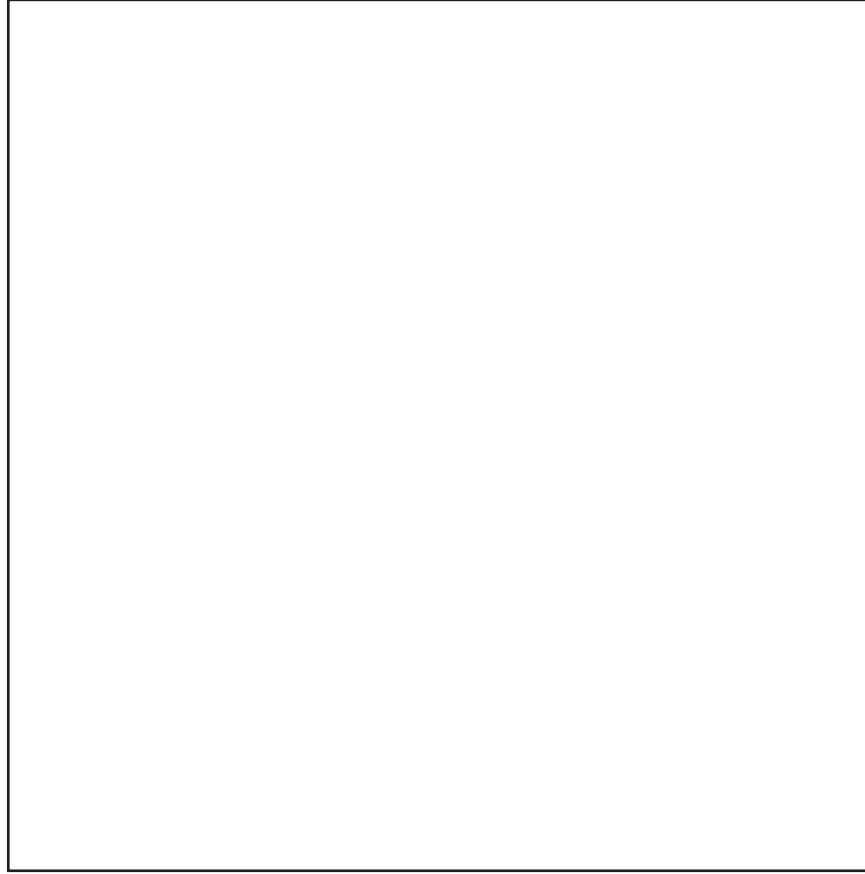


महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

RITA JAIN & CHARU JAIN DONATED MILK IN MEMORY OF HARISH JAIN



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.kl ds 63 o"kl

गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,

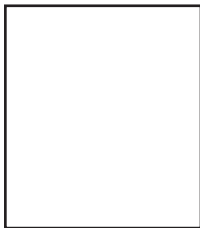
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

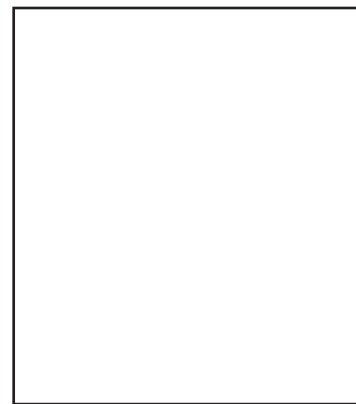
ftu egkukkkoks us cky vkJe ds fy, nku fn; k



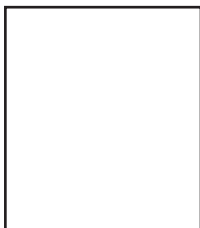
Anu Mahajan



Dheeraj Chopra



Mr & Mrs Shalini Nagpal



Neelam Khurana



Mrs Ashutosh Sood



DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972
FOR BETTER HOMES










IS : 12701



Water Storage Tanks
Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985



PVC Pressure Pipes
Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537



PVC Electrical Conduits
Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592



PVC SWR Pipes
Diplast PVC SWR Pipes

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting

Contact : 9041655102

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)
Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870**